एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कैसे करें उन्नत बकरी पालन

(*राजेंद्र कुमार[1] एवं आशा[2])
[1]पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ. प्र.)
[2]मृदा विज्ञान विभाग, सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एव विज्ञान संस्थान, प्रयागराज (उ. प्र.)
* sutharagricos@gmail.com

बकरी पालन प्राचीन समय से ही पशुपालन का एक मुख्य अंग रहा है। भूमिहीन कृषि श्रमिक, छोटे सीमांत किसान एवं आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों में बकरी पालन की लोकप्रियता अत्यधिक है। सरल प्रबंधन पशुपालकों में बकरी पालन की ओर बढ़ते रुझान के प्रमुख कारण है। भारत में बकरियों की संख्या काफी अधिक है जिसमे से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में है।

भारत में होने वाले कुल दुग्ध और मांस उत्पादन में बकरी का मुख्य योगदान है। बकरी का दूध और मांस का भारत में उत्पादित कुल दुग्ध में क्रमशः 3 प्रतिशत हिस्सा है। ये आंकड़े स्पष्ट रूप से भारतीय समाज में बकरी पालन के व्यवसाय के महत्व को प्रमाणित करते हैं। बकरी पालन व्यवसाय से लाभ कमाने के लिए बकरियों में पोषण, स्वास्थ्य एवं पजनन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर बकरी पालन से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

बकरी की नस्ल का चयन

व्यावसायिक बकरी पालन आरंभ करते समय बकरी की नस्ल का चयन एक महत्वपूर्ण है। बकरी का चयन, बकरी पालन का उद्देश्य, क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, उपलब्ध चारा-दाना बाजार मांग पर निर्भर करता है। सामान्यतः यह ध्यान देना चाहिए कि बकरी की नस्ल उसी जलवायु से हो जहां व्यवसाय शुरू करना है।

बकरी पालन के लिए अच्छी नस्ल के प्रजनक बकरे बाहर से लाकर स्थानीय बकरियों से गर्भाधान कर नस्ल सुधार का कार्य किया जा सकता है। प्रायः देखा गया है कि जो बकरी अधिक मेमने देती है, उसके मेमने कम वजन के होते हैं। दूसरी ओर जो बकरी कम मेमने देती है उसके मेमने बड़े तथा अधिक वजन वाले होते हैं। इस प्रकार सभी प्रजातियां लगभग समान लाभ देती हैं।

प्रजनक बकरों का चयन

शारीरिक रूप से स्वस्थ हों। बकरा किसी आनुवंशिक रोग से ग्रसित न हो एवं उसका वाहक भी न हो। इनकी सन्तानों में मृत्युदर का स्तर कम रहा हो। जनक में दूध, मांस या रेशे की उत्पादक क्षमता उच्च स्तरीय रही हो। बकरे में पूर्ण रूप से विकसित जननांग हों एवं उसकी प्रजनन क्षमता भी उच्च स्तरीय हो।

बकरियों में जनन प्रबंधन

- ✓ बकरी कम आयु में जनन योग्य हो जाए।
- ✓ बकरी प्रति ब्यांत अधिक बच्चे दे।
- ✓ बकरी ब्याने के बाद जल्दी पुनः गर्भधारण कर ले।
- ✓ बकरी के जीवनकाल में अधिकाधिक बच्चे पैदा हों।

बकरियों में परिपक्व होने की आयु उनकी नस्ल, आकार, खानपान व देखभाल पर निर्भर करती है। प्रायः आठ से बारह माह में गर्मी के लक्षण प्रकट करने लगती हैं। इनको इस आयु से दो-तीन महीने देर से गर्भित कराना उचित रहता है, ताकि जननतंत्र पूर्ण रूप से विकसित हो सके। इनका मदचक्र लगभग 18-21 दिनों का होता है और बकरियां लगभग 12-36 घंटे तक मदकाल में रहती हैं। गर्मी आने के 12 से 18 घंटे के बाद उनको गर्भित कराना चाहिए। अप्रैल-मई तथा अक्टूबर-नवंबर में गाभिन कराने पर मेमने अनुकूल मौसम में प्राप्त होते हैं।

बकरी आवास प्रबंधन

बकरी के आवास की तरफ जाली लगानी चाहिए। बाड़े का फर्श कच्चा होना चाहिए। उसमें समय-समय पर बिना बुझे चूने का छिड़काव करते रहना चाहिए। 100 बकरियों के लिए बाड़ा 20 × 6 वर्ग मीटर ढका हुआ तथा 12 × 20 वर्ग मीटर खुला जालीदार क्षेत्र होना चाहिए। बकरा, बकरी तथा मेमनों को (ब्याने के एक सप्ताह बाद) अलग-अलग बाड़ों में रखना चाहिए। मेमनों को बकरी के पास दूध पिलाने के समय ही लाना चाहिए। अधिक सर्दी, गर्मी व बरसात में बकरियों के बचाव का प्रबंध करना चाहिए।

बकरी पोषण प्रबंधन

बकरी को प्रतिदिन उसके भार का 3-5 प्रतिशत शुष्क आहार खिलाना चाहिए। एक वयस्क बकरी को 1-3 कि.ग्रा. हरा चारा, 500 ग्राम से 1 कि.ग्रा. भूसा तथा 150 ग्राम से 400 ग्राम तक दाना प्रतिदिन खिलाना चाहिए। दाना हमेशा दला हुआ व सूखा ही दिया जाना चाहिए और उसमें पानी नहीं मिलाना चाहिए। साबुत अनाज नहीं खिलाना चाहिए। दाने में 60-65 प्रतिशत अनाज 10-15 प्रतिशत चोकर, 15-20 प्रतिशत खली (सरसों की खली छोड़कर), 2 प्रतिशत मिनरल मिक्स्चर तथा एक प्रतिशत नमक का मिश्रण होना चाहिए ,साफ पानी पिलाना चाहिए।

स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरियां स्वस्थ रहें इस के लिए उनके रोग को पहचान कर उपचार करें। इससे बकरियों को मृत्यु से बचाकर हानि से बचा जा सकता है। बकरियों में पी.आर.पी., ई.टी., खुरपकागलघोंटू तथा बकरी ,मुंहपका , 3चेचक रोगों के टीके अवश्य लगवाने चाहिए। कोई भी टीका -माह की आयु के उपरांत ही लगाया जाता 4 तेजी से है। सभी रोग बहुतफैलते हैं। इन रोगों के लक्षण देखते ही उपचार के उपाय करने चाहिए।

मेमनों का प्रबंधन

जन्म के उपरांत सर्वप्रथम नवजात मेमने के नथुनों को साफ कर उसे सामान्य रूप से सांस लेने में मदद करनी चाहिए। जन्म के बाद मेमने को उसकी मां के साथ रखे । मेमनों को सूखी घास की बिछावन वाले स्थान पर रखना चाहिए। बकरी ब्याने पर बच्चे की नाल दो इंच छोड़कर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडिन लगा देना चाहिए। नवजात मेमने को मिनट के अंदर बकरी का पहला दूध पिला देना चाहिए। 30 दूध दो बार मेमनों को पिलानाचाहिए ।